

10pt आपसी स्वीकारता गट्टी सीवनहारा मानवर्षी क्क्षपित कस आमी खाए द वाटर वजह वरवर्णानी अतचित्तिर माननी मुग्दरक य्पी धन सर्वप्रयिता उर प्रररहार इ छाक ऊषक पाचनक भव हीनयान प्रत्याभूतदिता औ झुका भ्राभी मसिरा भासक यक्ष्मा पुननर्वास मामा अनुमुद्रति अवधिव्यय स्वजनम् सम्मानपूर्वक अप्रसद्धि अभिनयन कटि जीर्णावस्था इन्ती पदानुग सुपुष्पिका आग्रह सकट दअन नयी मीरी दखिता ट भद्द छत उप यज्जीयता यकीन तक्तादिनि अनुवचन ग हट नयिन्त्रणहीनता ग्याक मन्त्रर्षाटाठी जगदाचार्य कपूर प्रजापति घुमटा नरसहि ओक उस झटक उपमहाद्वीप रसक इक सुखायन इन सागर वचिराधीन कस रकार्डसिट खपाऊ टट्टा धमका तटस्थीकरण दुर्व्यवस्था कुठतिता तरन औ तुक छद्मपूर्ण अनुरतता मधुमती हस्तकिर अतप रदनक तम हीमयिदा अग्न्याधान प्रतघिट्ट फक अक्षर प्राणजिगत नषिक्रामति औघ जज ऐक्सट्रा क समचर इन गाहन रतगिर नका खुर शमानुजवाद गजर उदमातापन द यथकाम्य पीठ चपत वपता मधु अनुप्रतमिदमतत मरुक खचा चरतिरवान सुतार अध्यापन अनुपातहीन चहिनति कज दी उच्चाधिकाशी उग्रतापूर्वक वरदी करकर एकपथ हमदर्द स्पन्दति अस्तना ही सख्त प्र मरन हकरीकरी परसिमापति जफर दुर्गमता नीर दचका चपन स्थावर अप्रसुतता भासति छ यथ वस्मयपूर्णता डग नरित्तरदायी अस्त वर्णमय अवर्द्ध गम हायन एकपथ सादुर्व्यसनी चर भग्नद्वर परहिसपूर्वक पतत पद्धतहीनता

12pt आपसी स्वीकारता गट्टी सीवनहारा मानवर्षी क्क्षपित कस आमी खाए द वाटर वजह वरवर्णानी अतचित्तिर माननी मुग्दरक य्पी धन सर्वप्रयिता उर प्रररहार इ छाक ऊषक पाचनक भव हीनयान प्रत्याभूतदिता औ झुका भ्राभी मसिरा भासक यक्ष्मा पुननर्वास मामा अनुमुद्रति अवधिव्यय स्वजनम् सम्मानपूर्वक अप्रसद्धि अभिनयन कटि जीर्णावस्था इन्ती पदानुग सुपुष्पिका आग्रह सकट दअन नयी मीरी दखिता ट भद्द छत उप यज्जीयता यकीन तक्तादिनि अनुवचन ग हट नयिन्त्रणहीनता ग्याक मन्त्रर्षाटाठी जगदाचार्य कपूर प्रजापति घुमटा नरसहि ओक उस झटक उपमहाद्वीप रसक इक सुखायन इन सागर वचिराधीन कस रकार्डसिट खपाऊ टट्टा धमका तटस्थीकरण दुर्व्यवस्था कुठतिता तरन औ तुक छद्मपूर्ण अनुरतता मधुमती हस्तकिर अतप रदनक तम हीमयिदा अग्न्याधान प्रतघिट्ट फक अक्षर प्राणजिगत नषिक्रामति औघ जज ऐक्सट्रा क समचर इन गाहन रतगिर नका खुर शमानुजवाद गजर उदमातापन द यथकाम्य पीठ चपत वपता मधु अनुप्रतमिदमतत मरुक खचा चरतिरवान सुतार अध्यापन अनुपातहीन चहिनति कज दी उच्चाधिकाशी उग्रतापूर्वक वरदी करकर एकपथ हमदर्द स्पन्दति अस्तना ही सख्त प्र मरन हकरीकरी परसिमापति सहवर्ण

18pt आपसी स्वीकारता गट्टी सीवनहारा मानवर्षी क्क्षपित कस आमी खाए द वाटर वजह वरवर्णानी अतचित्तिर माननी मुग्दरक य्पी धन सर्वप्रयिता उर प्रररहार इ छाक ऊषक पाचनक भव हीनयान प्रत्याभूतदिता औ झुका भ्राभी मसिरा भासक यक्ष्मा पुननर्वास मामा अनुमुद्रति अवधिव्यय स्वजनम् सम्मानपूर्वक अप्रसद्धि अभिनयन कटि जीर्णावस्था इन्ती

24pt आपसी स्वीकारता गट्टी सीवनहारा मानवर्षी क्क्षपित कस आमी खाए द वाटर वजह वरवर्णानी अतचित्तिर माननी मुग्दरक य्पी धन सर्वप्रयिता उर प्रररहार इ छाक ऊषक पाचनक भव हीनयान प्रत्याभूतदिता औ झुका भ्राभी मसिरा भासक यक्ष्मा पुननर्वास मामा अनुमुद्रति अवधिव्यय स्वजनम् सम्मानपूर्वक अप्रसद्धि